IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

एलोरा की प्रतिमाओं में बहुपरिवर्तनशील दृष्टिकोण

नेहा यादव

शोध छात्रा

प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, भारत

सारांश

इतिहास के विद्यार्थियों के लिए कला एवं वास्तुकला के अध्ययन का उद्देश्य दृश्य कला के विद्याार्थियों से अलग होता है। उनका प्रमुख ध्यान सौंदर्य परिप्रेक्ष्य विश्लेषण पर होता है। जबकि इतिहास के विद्याार्थी के लिए तत्कालीन समाज के विभिन्न आयामों को समझकर उस समय के इतिहास को पुनः लिखना होता है। अधिकतर कला इतिहासकारों के लेख वर्णनात्मक हैं। इन परिस्थितियों में युवा शोधकर्ताओं के लिए शोध पद्धति और डिजाइन तैयार करना वास्तव में कठिन हो जाता है। प्रस्तुत पेपर में एक शोध पद्धति एवं डिजाइन प्रस्तुत करने का प्रारम्भिक प्रयास किया है जिससे परिणाम स्थान और समय के इतिहास को लिखने में मदद कर सके। एलोरा की प्रतिमाओं के अवलोकन से पता चलता है कि उनके भावों एवं अलंकरणों(जैसे–वस्त्र, आभूषण) में भिन्नतायें दिखाई पड़ती हैं। कम्प्यूटर अनुप्रयोगों की सहायता से आगे के उच्च सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए कई चरों एवं उनके गुणों को संहिताबद्ध किया गया है। जैसा की हम जानते हैं कि सामाजिक विज्ञान में अधिकांश गुण गैर–मैट्रिक होते हैं और कम्प्यूटर केवल बाइनरी संख्या जानता है। इसलिए कम्प्यूटर कोड विकसित करना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत पेपर में इन आकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषणविभिन्न चर एवं उनकी विशेषताओं के चित्रण के पीछे के अर्थ एवं विचार के लिए परिकल्पना विकसित करने के लिए किया गया है।

बीजशब्दः परिप्रेक्ष्य, सौंदर्य, डिजाइन, विश्लेषण, सांख्यिकीय, प्रतिमा।

वेरूल या एलोरा महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले से 14 मील उत्तर–पश्चिम में स्थित एक छोटा सा गाँव है। एलोरा पूर्वमध्यकाल का एक महत्वपूर्ण कला केन्द्र रहा है। एलोरा गॉव से आधा मील दूर पूर्व की दिशा में पहाड़ी के पश्चिम भाग पर उत्तर से दक्षिण की तरफ कुल 35 गुफायें निर्मित है। इसकी भौगोलिक स्थिति, उत्तर–पश्चिमी किनारा 20̊ 02′ 00′′उ, 75̊ 10′ 30′′पू, दक्षिण–पूर्वी किनारा 20̊ 1′ 10′′उ, 75̊ 11′ 00′′पू तथा मध्य केन्द्र 20̊ 1′ 35′′ उ, 75̊ 10′ 45′′पू है।इन गुफाओं का निर्माण 6ठीं–13वीं शताब्दीं ई0 के बीच हुआ। इन गुफाओं के वास्तु एवं शिल्पकर्म को उजागर करने में कलचुरी,

चालुक्य, वाकाटक, देवगिरि के यादवों तथा राष्ट्रकूट शासकों का विशेष योगदान रहा है।(आनन्द प्रकाश श्रीवास्तव, पृष्ठ–5,1993)

इन गुफाओं में तीनों प्रमुख धर्मों बौद्ध, ब्राह्मण तथा जैन अराध्य देवों की प्रतिमायें उत्कीर्ण हैं, जो तत्कालीन शासकों के धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक है। गुफा सं0 1 से 12 तक की गुफायें बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। इनमें बौद्ध धर्म के देवी–देवताओं, बुद्ध, बोधिसत्व, पद्मपाणि, लोकितेश्वर, मंजूश्री, बज्रपाणि, तारा, मामकी, लोचना आदि का अंकन मिलता है। गुफा सं0 13 से 29 तक की गुफाओं में ब्राह्मण धर्म से सम्बन्धित देवी–देवताओं की प्रतिमायें उत्कीर्ण की गयी हैं। हिन्दू धर्मशास्त्रों में वर्णित देवी–देवता शिव, विष्णु, गंगा, सरस्वती, भैरव, रावाणानुग्रह, त्रिपुरान्तक, नरसिंह, यमान्तक, अन्धारिक, कलारि, कल्याणसुन्दर, सप्तमान्निकाएं, गणेश, सूर्य आदि का अंकन मिलता है। जिसमें से शिव के विभिन्न रूपोंकी प्रतिमाओं की प्रधानता मिलती है। गुफा सं0 30 से 35 तक की गुफाओं में जैन धर्म से सम्बन्धित प्रतिमायें उत्कीर्ण है। जिनमें महावीर, बाहुबली, गोम्मेतेश्वर, अम्बिका यक्षी, सर्वानुभूति यक्ष, चक्रेश्वरी, पद्मावती, सिद्धायिका यक्षी आदि का अंकन मिलता है।

किसी भी स्थान की कलाकृतियां उस स्थान के तत्कालीन समाज का आइना होती हैं। एलोरा में मुख्य देवी–देवताओं की प्रतिमाएं एवं साथ में उनके सेवकों की प्रतिमाएं भी उत्कीर्ण की गई हैं। इन प्रतिमाओं की वेश–भूषा एवं आभूषण तत्कालीन समाज में प्रचलित वस्त्रों एवं आभूषणों की रूप–रेखा प्रस्तुत करते हैं।एलोरा की प्रतिमायें भाव–भंगिमा, वेश–भूषा एवं आभूषणों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न–भिन्न है। इन प्रतिमाओं में वस्त्रों की अपेक्षाकृत आभूषणों की प्रधानता दिखाई देती है। उपरी वस्त्रों का लगभग पूरी तरह से अभाव दिखाई देता है, केवल कुछ प्रतिमायें लबादा पहने हुये एवं कुछ दुपट्टा लिये हुये उत्कीर्ण है। वहीं निचले वस्त्रों में लम्बी धोती, छोटी धोती, कमर में बंधा दुपट्टा आदि का अंकन मिलता है। वस्त्रों में प्रमुख रूप से छोटी धोती का अधिक अंकन मिलता है। कुछ प्रतिमायें सिर पर पगड़ी पहने हुये दिखाई देती है। जहाँ पुरूषों की प्रतिमाओं में उन्हें भिन्न–भिन्न प्रकार के जनेऊ पहने हुये दिखाया गया है, जो की साधारण, अलंकृत, एवं कुछ केवल मोतियों से निर्मित है। वहीं स्त्री प्रतिमाओं में जनेऊ का अभाव दिखाई पड़ता है।आभूषणों में कंठहार, कुंडल,मुकुट, कड़ा, बाजूबंद एवं पाजेब आदि पहने हुये दिखायें गये है।

प्रस्तुत पेपर में एलोरा में उत्कीर्ण प्रतिमाओं में से केवल कुछ प्रतिमाओं का विश्लेषण किया गया है। ये प्रतिमायें ऑर्कियोलॉजी सर्वे ऑफ वेस्टरन इंडिया वॉल्यूम.5(1970) में प्रकाशित है। इसमें प्रकाशित प्रतिमाओं को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है। एक समूह सामान्य स्त्री, पुरूष की प्रतिमाओं का तथा दूसरा समूह तीनों प्रमुख धर्मों के देवी–देवताओं की प्रतिमाओं का। इस प्रक्रिया में रिपोर्ट में प्रकाषित मुख्य देवी–देवताओं की प्रतिमाओं में से 29 प्रतिमाओं को अध्ययन के लिये लिया गया है। जिनमें प्रमुख रूप से तारा, बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर, वज्रपाणि, पद्मपाणि, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, सरस्वती, भैरव, पार्वती, नरसिंहा, हिरण्यकश्यप, सूर्य, उमा, गोम्मेतेश्वर आदि है। यहॉ प्रतिमाओं के जनेऊ, वस्त्रों, आभूषणों (कंठहार, कुंडल, मुकुट, कड़ा, बाजूबंद एवं पाजेब) एवं केश–विन्यास में भिन्नता दिखाई देती है। वस्त्रों में केवल ऊपरी वस्त्र तथा नीचे के वस्त्र दिखाई देते है, जिसमें से ऊपरी वस्त्र का अस्तित्व कुछ ही प्रतिमाओं में दिखाई पड़ता है।प्रतिमाओं के जनेऊ, आभूषण की प्रकृति भी भिन्न–भिन्न है, कहीं ये हल्के, कहीं भारी, कहीं साधारण तो कहीं अलंकृत दिखाई देते है।प्रतिमाओं की इन भिन्नताओं के आधार पर दो प्रश्न उभरकर सामने आते हैं–पहला, क्या इन प्रतिमाओं का निर्माण एक ही काल में हुआ या अलग–अलग कालों में हुआ है।दूसरा बड़ा प्रश्न यह उठता है कि क्या इनके अलंकरण का दूसरा उद्देश्य प्रतिमाओं की प्रकृति एवं चरित्र को उजागर करना था।

कुल 74 प्रतिमाओं की पहचान कर उन्हें 29 प्रकार के प्रतिमाओं में विभाजित और उनकी विशेषताओं जैसे–वस्त्र, आभूषण आदि को 12 चरों में विभाजित किया गया है(सारणी–1)। इन प्रतिमाओं में कोई व्यवस्था है या नहीं यह ज्ञात करने के लिए आकड़ों को पहले काई स्क्वायर विधि द्वारा नॉर्मलाइज्ड करके सिंगुलर वैल्यू डिकम्पोजिशन (एस॰वी॰डी॰) तकनीकी को प्रयोग में लाया गया है, जो की प्रिंसिपल कम्पोनेंट सल्यूशन पर आधारित है। यह मैट्रिक्स एस वी डी के अधीन है, जिसमे स्टैटिकल्स सॉफ्टवेयर पैकेज एस॰पी॰एस॰एस॰(वर्जन 16) का प्रयोग किया गया है।इस प्रक्रिया में दो सारणीरो कोऑर्डिनेट औरकॉलम कोऑर्डिनेट बनाये गये है(सारणी–2,3)। कॉलम कोऑर्डिनेटसारणी को इस प्रकार संशोधित किया जाता है किडॉयमेंशन 3 और डॉयमेंशन 2के सभी ऋणात्मक मान दोकॉलम में है।जबकि इन डायमेंसन्स के सभी धनात्मक मान इस कॉलम में है (सारणी–4,5)।

यह जानना बहुत ही रूचिकर है किडॉयमेंशन–1लगभग 41 प्रतिशत धनात्मक मूल्य रखता है, बाकी बचे हुये ऋणात्मक मूल्य के साथ है।डॉयमेंशन–1 और डॉयमेंशन–3 की स्थिति में लगभग समान चित्र है, जो की इन 74 प्रतिमाओं जो कीएकसमान नहीं है के सम्भावित कालों की तरफ संकेत करते हैं। जब विपरीत सह–चर, अवलोकितेश्वर, वज्रपाणि, पद्मपाणि, नरसिंह, सूर्य, गोम्मेतेश्वर, और पुरूष प्रतिमा की स्थिति के अलावा डॉयमेंशन–1एवं डॉयमेंशन–2में प्रतिबिम्बित होते हैं, तो वहॉ हम एक सुव्यवस्थित सह–सम्बन्ध पाते हैं। यद्यपिपुरूष प्रतिमाओं की संख्या 8हैं बाकी अन्य प्रतिमायें अकेली है। अतः जिन प्रतिमाओं को केवल एक बार उत्कीर्ण किया गया है, उनके टेम्पोरल डायमेंसन में समय के साथ बदलाव देख या समझ पाना कठिन है।वहीं कुछ पुरूष प्रतिमाओं की स्थिति में यह समान चित्रण की तरफ संकेत करता है, अलग से समय के साथ इसमें कोई परिवर्तन नहीं दिखाई देता है।

कॉलम कोऑर्डिनेट का डॉयमेंशन–1 दो समूह प्रस्तावित करता है। समूह एक में सकारात्मक मान के साथ शिरोवस्त्र, ऊपरी वस्त्र, जनेऊ, कमरबंद, पाजेब और केश–विन्यास आदि सम्मिलित है। जबकि समूह दो में ऋणात्मक मान के साथ निचला वस्त्र, कंठहार, कुंडल, बाजूबंद, मुकुट और कड़ा आदि सम्मिलित है। यह जानना रूचिकर है किकॉलम कोऑर्डिनेट केडॉयमेंशन–1 एवं डॉयमेंशन–2की तुलना करने पर यह सामने आता है कि दो महत्वपूर्ण अलंकृत वस्तु अर्थात् निचला वस्त्र एवं कंठहार में काई परिवर्तन नहीं दिखाई देता है, जैसा की उनके ऋणात्मक मूल्यों में दिखाई देता है। इन दोनों महत्वपूर्ण अलंकृत वस्तुओं को देख यह पता कि कलाकार ने इनके चित्रण में न कोई बदलाव किया और न ही इनका स्वरूप बदला है। जबकि कुंडल, मुकुट, बाजूबंद, और कड़ा की स्थिति में यहॉ उल्टा सह–सम्बन्ध है, और वैसी ही स्थिति जनेऊ, उपरी वस्त्र और केश–विन्यास का स्थिति में भी है। कंठहार, निचला वस्त्र को छोड़कर बाकी बचे हुये अन्य अलंकृत वस्तुओं के निर्माण में कलाकार ने नये विचारों के साथ प्रयोग किया है।

पूरे अभ्यास का सुझाव यह है कि सांख्यिकीय रूप से देखा जाय तो यह पता चलता है कि ये सभी प्रतिमायें एक से अधिक कलाकारों द्वारा एक ही काल में निर्मित नहीं की गयी थी। हालांकि यह बहुभिन्नरुपी विश्लेषण का प्रथम प्रयास है। अभीकंठहार, कुंडल, बाजूबंद एवं वस्त्रों के प्रकारों पर विचार नहीं किया गया है। वास्तव में अपने अगले प्रयास में एक विशेष काल के कलाकारों के समूहों और अलंकरण के पीछे के विचारों को उजागर किया जायेगा। साथ ही देवी–देवताओं निरूपित प्रतीकों और प्रतिमाओं में चित्रित अन्य विशेषताओं जैसे आभूषण/अलंकृत विशेषताओं को आपस में जोड़ने का प्रयास किया जायेगा। उपरोक्त विधि द्वारा यदि हमें किन्हीं विभिन्न अलंकरणों में कोई व्यवस्था दिखाई पड़ती है तो उसकी सहायता से उन प्रतिमाओं की भी पहचान की जा सकती है, जिनमें उनके धार्मिक मान्यताओं द्वारा निर्धारित प्रतीकात्मक चिन्ह या तो टूट

गये है या उनको कुछ परिवर्तन के साथ दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त प्रतिमाओं के निर्माण काल में प्रचलित सांस्कृतिक विषयों पर भी सम्भवतः उचित प्रकाश पड़ेगा।

प्रतिमा	शिरोवस्त्र	ऊपरी पस्त्र	निचला वस्त्र	जनेऊ	कंठहार	कर्णकुंडल	बजूबंद	कमरबंद	मुकुट	कड़ा	पाजेब	केश–विन्यास	कुल
तारा	0	0	2	0	2	1	1	0	2	0	0	1	**9**
बोधिसत्व	0	0	2	2	2	2	2	2	2	2	0	0	**16**
पुरुष	1	0	5	6	7	7	4	4	6	7	1	3	**51**
स्त्री	0	1	8	2	8	5	5	6	7	7	4	0	**53**
बुद्ध	0	1	0	0	0	0	0	0	0	0	0	1	**2**
तीन मूर्ति	0	0	1	1	1	1	1	1	1	1	0	0	**8**
अवलोकितेश्वर शीर्ष	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	**3**
वज्रपाणि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	**3**
स्त्री शीर्ष	0	0	0	0	2	2	0	0	2	0	0	0	**6**
पद्मपाणि	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	1	**5**
सरस्वती	0	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	**9**
ब्रह्मा	0	0	1	2	2	2	2	2	2	1	1	0	**15**
शिव	0	0	9	10	10	10	10	9	10	9	2	0	**79**
विष्णु	0	0	1	2	2	2	2	2	2	1	1	0	**15**
नरसिम्हा	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	**7**
हिरण्यकश्यप	0	0	1	0	1	1	1	1	1	1	0	0	**7**
भैरव	0	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	**7**
शिव (मार्कण्डेय)	1	0	2	0	2	2	2	0	1	2	0	0	**12**
दम्पत्ति	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	0	**5**
कामदेव	0	0	1	1	1	1	0	1	1	0	0	0	**6**
श्रति	0	0	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	**3**
पार्वती	0	0	3	1	3	3	3	0	3	3	1	3	**23**
वराह	0	0	1	1	1	0	1	0	1	0	0	0	**5**
सूर्य	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	0	**7**
डमा	0	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	**7**
सप्तमातृका	0	1	14	5	14	14	11	0	13	10	8	1	**91**
गणेश	0	0	2	1	1	0	2	1	2	2	0	0	**11**
अम्बिका	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	1	1	**8**
गोमेतेश्वर	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	**4**
कुल	**2**	**4**	**61**	**40**	**67**	**59**	**52**	**37**	**67**	**51**	**22**	**15**	**477**

सारणी 1:एलोरा–प्रतिमाओं की सूची

सारणी 2:फाइनल रो कोऑर्डिनेट्स

	डॉयमेंशन्		
	1	2	3
1	.037	2.856	−.703
2	−4.035	.192	−1.571
3	−3.107	−.446	−4.543
4	−2.650	−.113	.522
5	6.653	2.478	−2.097
6	−4.035	.192	−1.571
7	3.824	2.356	.906
8	2.874	2.663	2.007
9	6.051	−1.218	.411
10	.962	.849	2.893
11	−4.583	2.456	−.055
12	−1.084	.426	1.685
13	−4.218	1.058	.145
14	−1.084	.426	1.685
15	−1.392	−3.322	−.273
16	−2.881	−2.079	.063
17	−1.880	−2.582	1.079
18	−2.764	−2.942	−1.016
19	1.903	−1.916	2.834
20	.088	−1.873	.422
21	5.694	−1.140	.609
22	−1.075	1.912	1.214
23	1.568	−2.783	1.857
24	−2.256	−2.878	−.305
25	−.798	2.583	−.363
26	−2.096	−.900	2.505
27	4.612	−.635	−3.115
28	−3.370	.029	−2.469
29	3.215	1.386	2.154

सारणी 3:फाइनल कॉलम कोऑर्डिनेट्स

	डॉयमेंशन्		
	1	2	3
शिरोवस्त्र	2.436	.306	1.346
ऊपरी वस्त्र	2.019	−.667	1.400
निचला वस्त्र	−3513	−.224	−2.426
जनेऊ	5.835	1.864	−4.008
कंठहार	−2.628	−2.023	−.270
कर्णकुंडल	−4.575	1.331	−1.148
बाजूबंद	−3.038	4.024	.563
कमरबंध	5.548	1.245	−5.294
मुकुट	−2.071	−1.320	.532
कड़ा	−3.651	3.749	2.011
पाजेब	5.229	3.729	2.240
केश−विन्यास	4.238	−9.050	.141

सारणी 4:फाइनल कॉलम कोऑर्डिनेट्स डॉयमेंशन्−1

च्र	डॉयमेंशन्−1
शिरोवस्त्र	2.436
ऊपरी वस्त्र	2.019
निचला वस्त्र	−3.513
जनेऊ	5.835
कंठहार	−2.628
कर्णकुंडल	−4.575
बाजूबंद	−3.038
कमरबंध	5.548
मुकुट	−2.071
कड़ा	−3.651
पाजेब	5.229
केश−विन्यास	4.238

सारणी 5: फाइनल कॉलम कोऑर्डिनेट्स ऑफ डॉमेंशन 2 एण्ड 3 रिअरेंज्ड इन निगेटिव एण्ड पॉजिटिव वैल्यूज

चर	निगेटिव डॉयमेंशन–3	चर	पॉजिटिव डॉयमेंशन–2
निचला वस्त्र	–2.426	शिरोवस्त्र	.306
जनेऊ	–4.008	जनेऊ	1.864
कंठहार	–.270	कर्णकुंडल	1.331
कर्णकुंडल	–1.148	बाजूबंद	4.024
कमरबंध	–5.294	कमरबंध	1.245
		कड़ा	3.749
		पजेब	3.729
चर	निगेटिव डॉयमेंशन–2	चर	पॉजिटिव डॉयमेंशन–3
ऊपरी वस्त्र	–.667	शिरोवस्त्र	1.346
निचला वस्त्र	–.224	ऊपरी वस्त्र	1.400
कंठहार	–2.023	बाजूबंद	.563
मुकुट	–1.320	मुकुट	.532
केश–विन्यास	–9.050	कड़ा	2.011
		पजेब	2.240
		केश–विन्यास	.141

चित्र 1: बोधिसत्व, गुफा 9(सौजन्य–अ0स0वे0इ0,वॉल्यूम5)

चित्र 2: तारा, गुफा 6(सौजन्य–अ0स0वे0इ0,वॉल्यूम5)

चित्र 3: भैरव, (सौजन्य–अ0स0वे0इ0,वॉल्यूम5)

चित्र 4: सूर्य (सौजन्य–अ0स0वे0इ0,वॉल्यूम5)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ते, आर.एस. एण्ड महाजन, वी.डी, (1962). अजंता, एलोरा एण्ड औरंगाबाद केव. डी.बी.तारापोरेवाला सन्स एण्ड प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई.
2. बर्गेश जेम्स,(1970). आर्कियोलाजिकल सर्वे ऑफ वेस्र्टन इण्डिया, खण्ड पॉच(रिर्पोट ऑन दी एलूरा केव टेम्पल्स एण्ड दी ब्रह्मानिकल एण्ड जैन केव इन वेस्र्टन इण्डिया). इण्डोलॉजिकल बुक हाउस, वाराणसी (इण्डिया).
3. श्रीवास्तव, आनन्द प्रकाश.(1993).एलोरा की शैव प्रतिमाएं. रामानन्द विद्या भवन, दिल्ली.